Downloaded from www.studiestoday.com

पूरक पुस्तक – वितान भाग –1

पाठ–1 भारतीय गायिकाओं मे बेजोड़ – लता मंगेशकर

महत्त्वपूर्ण लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र.1: लेखक को लताजी की आवाज़ के जादू का परिचय कब व कैसे हुआ ?

उ.– वर्शों पूर्व, जब लेखक ने अपनी बीमारी के दौरान रेडियो खोला तो लताजी द्वारा गया हुआ गाना सुना व गाने के अंत में गायिका का नाम घोशित हुआ–लता मंगेशकर। यही उनका प्रथम परोक्ष परिचय था।

प्र.2: लताजी के गायन की किन विशेशताओं की ओर लेखक ने ध्यान आकर्शित किया है ?

उ.– लताजी के गायन की निम्नांकित विशेशताओं की ओर लेखक ने पाठकों का ध्यान आकर्शित किया है–

1. गानपन व सुरीलापन – वह मिठास जो श्रोता को मस्त कर देती है।
2. स्वरों की निर्मलता, कोमलता व मुग्धता
3. नादमय उच्चार – गीत के किन्हीं दो भाब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा सुंदर रीति से भर देना, जिससे वे दोनों भाब्द विलीन होते–होते एक दूसरे में मिल जाते हैं।
4. उच्चारण की भाुद्धता।
5. भावानुकूल आरोह अवरोह।

प्र.3: लता की गायकी का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उ.– लता की गायकी ने लोगों में संगीत के प्रति रुझान विकसित किया है। आम आदमी भी अब संगीत की सूक्ष्मता को समझने लगा है। आज के बच्चों के गले पहले की तुलना में अधिक सधे हुए व अधिक सुरीले हैं। संगीत के विविध प्रकारों से उनका परिचय बढ़ा है।

निबंधात्मक प्रश्न :

प्र.1: चित्रपट संगीत व भास्त्रीय संगीत में अंतर स्पश्ट कीजिए।

उ.– चित्रपट संगीत में प्रयोगधर्मिता है। ये संगीतकार जहाँ भास्त्रीय संगीत की रागदानी को अपनाते है, वहीं लोक संगीत की अपार विपुल सामग्री का भी बेझिझक उपयोग अपने चित्रपट संगीत में करते हैं। उसमें लचकता होती है। इसमें प्रायः आधे तालों का प्रयोग होता है। द्रुतलय व चपलता इसका प्रमुख गुणधर्म है।

भास्त्रीय संगीत में गम्भीरता अपेक्षित होती है। उसमें ताल अपने परिश्कृत रूप में प्रयुक्त होता है। भास्त्रीय संगीतकार आत्मसंतुश्ट वृत्ति के हैं, वे नए प्रयोगों में रुचि नहीं दिखाते, बल्कि कर्मकाण्ड को आवश्यकता से अधिक महत्त्व देते हैं।

भास्त्रीय संगीत का आनन्द लेने के लिए श्रोता के पास कम से कम घण्टा–आधा घण्टा का समय होना चाहिए, जबकि चित्रपट संगीत दो तीन मिनट में ही श्रोता को भाव विभोर कर सकता है ।

अन्य निबंधात्मक प्रश्न

प्र.2: संगीत के क्षेत्र में लताजी के योगदान को रेखांकित कीजिए।

प्र.3 कुमार गंधर्व ने लता मंगेशकर को बेजोड़ गायिका क्यों माना है ?

पाठ–2 : राजस्थान की रजत बूँदें

महत्त्वपूर्ण लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र.1: राजस्थान में पानी के कौन–कौन से रूप माने जाते हैं ?

उ.– राजस्थान में पानी के तीन रूप माने जाते हैं–

1. पालर पानी – वर्शा का वह जल जो बहकर नदी तालाब आदि में एकत्रित हो जाता है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

2. पाताल पानी – जो वर्शा जल जमीन में नीचे धँसकर 'भूजल' बन जाता है। वह कुओं/ट्यूबबेल आदि द्वारा हमें प्राप्त होता है।
3. रेजाणी पानी – वह वर्शा जल जो रेत के नीचे जाता तो है, परन्तु खड़िया मिट्टी के परत के कारण भूजल से नहीं मिल पाता व नमी के रूप में रेत में समा जाता है, जो कुंई द्वारा प्राप्त किया जाता है ।

प्र.2: रेगिस्तान की भीशण गर्मी में भी रेत में समाया रेजाणी पानी भाप बनकर क्यों नहीं उड़ पाता ?

उ. – मिट्टी के कणों के विपरीत रेत के कण बारीक होते हैं। वे एक दूसरे से चिपकते नहीं अतः मिट्टी की तरह रेत में दरारें नहीं पड़तीं । इस कारण नमी भाप बनकर उड़ नहीं पाती व कुंइयों के माध्यम से भुद्ध मीठे जल के रूप में प्राप्त होती है।

प्र.3: कुंई का मुँह छोटा क्यों रखा जाता है ?

उ. – कुंई का मुँह छोटा रखने के पीछे तीन प्रमुख कारण हैं –

1. दिनभर में एक कुंई में मुश्किल से दो तीन घड़ा पानी ही एकत्रित हो पाता है। बड़ा व्यास होने पर पानी की गहराई कम हो जाएगी, जिससे उसे निकालना सम्भव नहीं होगा।
2. मुँह चौड़ा होने पर गर्मी से पानी वाश्प बनकर उड़ जाएगा।
3. पानी को साफ रखने व चोरी से बचाने के लिए कुंई को ढँकना जरूरी है, जो सँकरे मुँह होने पर ही संभव है।

प्र.4: कुंई की खुदाई में काम आने वाले औजार व चिनाई के काम में आने वाली सामग्री का विवरण दीजिए।

उ.– कुंई की खुदाई, व्यास कम होने के कारण फावड़े या कुदाल से नहीं की जाती ; उसके लिए 'बसौली' का प्रयोग किया जाता है। यह छोटे हत्थे वाला फावड़े के आकार जैसा औजार होता है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कुंई की चिनाई के लिए 'खींप' नामक घास से बने, लगभग तीन अंगुल मोटे रस्से–का प्रयोग होता है। जहाँ खींप घास उपलब्ध नहीं होती, वहाँ चिनाई के लिए अरणी, बण(कैर), बावल या कुंबट के पेड़ों की लकड़ी से बने लट्ठों का प्रयोग किया जाता है।

प्र.5: एक कुंई की चिनाई में लगभग कितना रस्सा लग जाता है ?

उ. – पाँच हाथ व्यास वाली कुंई में रस्से की एक कुंडली/घेरा बनाने में ही लगभग पन्द्रह हाथ रस्सा लग जाता है। एक हाथ की गहराई तक की चिनाई में रस्से के आठ–दस लपेटे लग जाते हैं। यदि कुंई की गहराई तीस हाथ भी मान लें तो उसकी चिनाई में लगभग चार हजार हाथ लंबा रस्सा लगेगा।

अन्य महत्त्वपूर्ण लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र.6: चेजारों अपने सिर की रक्षा कैसे करते हैं ?

प्र.7: गहराई में चेजारो को भीशण गर्मी से राहत कैसे पहुँचाई जाती है ?

प्र.8: मरुभूमि में वर्शा की मात्रा का माप कैसे किया जाता है ?

प्र.9: राजस्थान के किन–किन क्षेत्रों में कुंइयों का निर्माण होता है ? अथवा खड़िया पत्थर की परत कहाँ–कहाँ पाई जाती है ?

प्र.10: गोधूलि बेला में कुंइयों से पानी निकालने का वर्णन लेखक ने किस प्रकार किया है ?

निबंधात्मक प्रश्न :

प्र.1: कुंई निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन विस्तार से कीजिए।

उ.– मरुभूमि में कुंई निर्माण का कार्य चेलवांजी यानी चेजारो करते है। वे खुदाई व विशेश तरह की चिनाई करने में दक्षतम है। कुंई बनाना एक विशिश्ट कला है। चार–पाँच हाथ के व्यास की कुंई को तीस से साठ–पैंसठ हाथ तक की गहराई तक खोदने वाले चेजारो अत्यन्त कुशलता व सावधानी पूर्वक यह कार्य सम्पन्न करते हैं। चिनाई में थोड़ी सी भी चूक चेजारो के प्राण ले सकती है। हर दिन थोड़ी–थोड़ी खुदाई होती है। डोल से मलवा निकाला जाता है और फिर अब तक खुद चुकी गहराई की चिनाई की जाती है। ताकि मिट्टी धँसे नहीं ।

बीस–पच्चीस हाथ की गहराई तक जाते–जाते गर्मी का काफी बढ़ जाती है और हवा भी कम होने लगती है। इससे चेजारो की कार्यक्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। तब ऊपर

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

से मुट्ठी भर रेत तेजी से नीचे फेंकी जाती है, ताकि ताजी हवा नीचे जा सके और गर्म हवा बाहर आ सके । चेजारो सिर पर कांसे,पीतल या किसी अन्य धातु का एक बर्तन टोप की तरह पहनते हैं ताकि ऊपर से रेत, कंकड़–पत्थर से उनका बचाव हो सके। किसी–किसी स्थान पर ईंट की चिनाई से मिट्टी नहीं रुकती तब कुंई को रस्से से बाँधा जाता है। ऐसे स्थानों पर कुंई खोदने के पूर्व ही खींप नामक घास का ढेर लगाया जाता है। खुदाई भुरू होते ही तीन अंगुल मोटा रस्सा बनाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया जाता है। एक दिन की खुदाई पूरी होने पर इसके तल पर दीवाल के साथ सटाकर रस्से का एक के ऊपर एक गोला बिछाया जाता है और रस्से का आखिरी छोर ऊपर रहता है। अगले दिन फिर कुछ हाथ मिट्टी खोदी जाती है और रस्से की पहले दिन जमाई गई कुंडली दूसरे दिन खोदी गई जगह में सरका दी जाती है। बीच–बीच में जरूरत होने पर ईंट से भी चुनाई की जाती है।

जिन स्थानों पर पत्थर और खींप नहीं मिलता वहाँ लकड़ी के लंबे लट्ठों से चिनाई की जाती है। ये लट्ठे,अरणी,बण,बावल या कुंबट के पेड़ों से बनाए जाते है। इनके उपलब्ध न होने पर आक तक से भी काम लिया जाता है। खड़िया पत्थर की पट्टी आते ही खुदाई का काम रुक जाता है और नीचे बूँद–बूँद करके पानी की धार लग जाती है। यह समय कुंई की सफलता स्वरूप उत्सव का अवसर बन जाता है।

अन्य निबंधात्मक प्रश्न

प्र.2: कुंई निर्माण पर किस प्रकार ग्राम–समाज का नियन्त्रण रहता है ? अथवा व्यक्तिगत होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में कुंइयों पर ग्राम–समाज अपना नियन्त्रण क्यों रखती है ?

प्र.3: कुंई की चिनाई प्रक्रिया विस्तार से समझाइए।

पाठ–3 : आलो आंधारि

महत्त्वपूर्ण लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र.1: परित्यक्ता स्त्रियों को समाज में किन कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है ?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उ.– परित्यक्ता स्त्रियों को बेघर होने पर किराए के मकानों में रहकर जीवनयापन करना पड़ता है। गंदी बस्तियों में स्थित उन मकानों में न तो भौचालय होता है और न ही आस–पास स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण। उसे समाज के तरह–तरह के प्रश्नों का सामना करना पड़ता है, ताने सुनने पड़ते है, लोगों की कामुख/गंदी निगाहों का झेलना पड़ता है। उसकी दिनचर्या पर लोगों की कड़ी निगाह रहती है। उसकी सहायता के लिए उसके सगे–संबंधी भी आगे नहीं आते।

प्र.2: बेबी को अपने पति का घर क्यों छोड़ना पड़ा ?

उ.– उसका विवाह 13 वर्श की उम्र में अपने से दोगुनी उम्र वाले आदमी के साथ कर दिया गया था। भाादी के बारह तेरह बर्श तक तो उसने पति के अत्याचार सहन किए, किंतु अत्याचार जब सीमा से अधिक हो गए तो उसने अपने तीन बच्चों के साथ पति का घर छोड़ दिया।

प्र.3: बेबी को तातुश के घर काम कैसे मिला ?

उ.– एक कोठी में ड्राइवर का काम करने वाले एक परिचित सुनील को जब यह पता चला कि बेबी को डेढ़ सप्ताह बाद भी कोई काम नहीं मिला है तब वह उसे तातुश के घर ले गया। उसी ने उसे वहाँ काम दिलाने में मदद की।

अन्य महत्त्वपूर्ण लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र.4: सजने–सँवरने के बारे में बेबी का नजरिया क्या था ?

प्र.5: बेबी को अपनी माँ की मृत्यु का समाचार कब व कैसे मिला ?

प्र.6: भार्मिला दी तथा बेबी के संबंधों के बारे में बताइए।

प्र.7: बेबी को खुले आसमान के नीचे एक रात क्यों बितानी पड़ी ?

प्र.8: बेबी की उसके बड़े लड़के से मुलाकात कैसे हुई ?

प्र.9: तातुश के घर में आने पर बेबी के जीवन में क्या परिवर्तन आया ?

निबंधात्मक प्रश्न :

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्र.1: घरेलू नौकरों को किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है ?

उ.– घरेलू नौकरों को अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे–

1. निम्न जीवन स्तर :– पेट पालने के लिए घरेलू नौकर के रूप में काम करने वालों का जीवन स्तर बहुत निम्न होता है। कारण उन्हें काम के अनुसार उचित मजदूरी नहीं मिलती। आय कम होने से, अधिक किराया देने में असमर्थ होने के कारण उन्हें छोटे–छोटे, सुविधाहीन किराये के मकानों में रहना पड़ता है।
2. प्रातः जल्दी उठकर, बिना कुछ खाए–पिए काम में जुट जाना पड़ता है। फलतः वे कुपोशणजन्य विविध बिमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। वे ढ़ग से पहन–ओढ़ भी नहीं पाते।
3. मालिक व उसके परिजनों के इशारों पर नाचना पड़ता है।
4. कार्य में देरी हो जाने या काम बिगड़ जाने पर डाँट सहनी पड़ती हैं। कभी–कभी तो गाली–गलौच व मारपीट भी सहनी पड़ती है।
5. कार्य के घंटे निर्धारित नहीं होते। सुबह से रात तक काम जुटे रहना पड़ता है। कभी कोई अवकाश भी नहीं मिलता।
6. आय कम होने के कारण उनके बच्चे भी पड़ लिख नहीं पाते है। फलतः वे भी घरेलू नौकर बनने पर मजबूर हो जाते है।
7. नौकरी में भी स्थायित्व नहीं होता। मालिक कब काम से हटा दे – यह भय सदा बना रहता है।
8. काम से हटा दिए जाने पर, नया काम मिलने तक बेरोजगार रहना पड़ता है।
9. घरेलू स्त्री नौकरों को तो कभी–कभी यौन–भोशण का शिकार भी बनना पड़ता है। बात न मानने पर चोरी आदि के आरोप लगाकर पुलिस के हवाले भी कर दिया जाता है।

इस प्रकार घरेलू नौकरों का जीवन गरीबी, विवशता व लाचारी की जीती जागती मिशाल बनकर रह जाता है।

अन्य निबंधात्मक प्रश्न

प्र.2: बेबी के जीवन–निर्माण में तातुश के योगदान को रेखांकित कीजिए।

प्र.3: बेबी के चरित्र की विशेशताएँ बताइए।

Downloaded from www.studiestoday.com